उपसंहार

यह एक क्षेत्रकार्य है, जिसे समाज भाषा विज्ञान के अंतर्गत किया गया है| **"ओड़िशा के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के हिंदी भाषा शिक्षण में मिलने वाली अशुद्धियाँ (विशेष संदर्भ झारसुगुड़ा शहर के विद्यालय)"** विषय पर शोध कार्य करते समय मैं कई विद्यालयों में गई, कुछ विद्यालयों ने अनुमति दी तो कुछ विद्यालयों में समय और संसाधन की कमी के कारण मुझे वापस आना पड़ा | प्राप्त डाटा एक रूपरेखा है, अहिंदी भाषी क्षेत्र के हिंदी भाषा शिक्षण पद्धति में बदलाव के लिए |

इस लघु शोध कार्य के लिए झारसुगुड़ा के सात विद्यालयों को चुना गया | उनके नाम हैं –

(1) सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (हिंदी माध्यम)
(2) द एसेंबली ऑफ़ गॉड स्कूल
(3) ओ.पी.एम. बालिका उच्च विद्यालय
(4) अरोमा पूर्णांग शिक्षा गवेषणा केंद्र मातृज्योति विद्यालय
(5) सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (ओड़िया माध्यम)
(6) सरकारी उच्च बालिका विद्यालय
(7) ओ.पी.एम. उच्च विद्यालय (बालक)

इन विद्यालयों के कक्षा छह, सात और आठ से दस-दस की संख्या में विद्यार्थियों को चुना गया | और कुल विद्यार्थियों की संख्या प्रत्येक विद्यालयों में तीस रही | कुछ कारणों से विद्यार्थियों की संख्या में बदलाव भी है जैसे-

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (ओड़िया माध्यम) को स्थापित हुए तीन से चार वर्ष हुए है, इसलिए विद्यार्थियों के अभाव में कक्षा आठ से पाँच विद्यार्थियों से प्रश्नावली भरवाई गई | अत: इस विद्यालय में विद्यार्थियों की कुल संख्या 30 न होकर 25 रही |

सरकारी बालिका उच्च विद्यालय में 30 विद्यार्थियों का चयन किया गया | लेकिन दो विद्यार्थी ऐसे थे जिन्हें अपना नाम तक लिखना नहीं आता था | उनमें से एक विद्यार्थी कक्षा छह और दूसरी कक्षा आठ की थी | यहाँ हिंदी पढ़ने और पढ़ाने वाले शिक्षक दोनों ही वर्गों की स्थिति भाषाई दृष्टिकोण से चिंतनीय है|

अरोमा पूर्णांग शिक्षा और गवेषणा केंद्र मातृज्योति विद्यालय में एक विद्यार्थी की अनुपस्थिति के कारण 30 के स्थान पर 29 विद्यार्थियों से प्रश्नावली भरवाई गई |

प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों का परीक्षण -

मुख्य रूप से यह प्रश्नावली अहिंदी भाषी क्षेत्र ओड़िशा के झारसुगुड़ा शहर के विद्यालयों में हिंदी शिक्षण के जमीनी स्तर को या बुनियादी स्तर को जाँचने के लिए बनाई गई | इस प्रश्नावली के **परिशिष्ट (क)** में विद्यार्थियों का परिचय, शिक्षण की भाषा, शिक्षा का बोर्ड.....आदि सामान्य जानकारी प्राप्त की गई| **परिशिष्ट (ख) II** के द्वारा विद्यार्थियों के हिंदी वर्णमाला का ज्ञान, स्वर और व्यंजन वर्णों की जानकारी प्राप्त की गई | **परिशिष्ट (ग)** के द्वारा व्याकरण के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए प्रश्न तैयार किया गया | जिसमें (1) स्त्रीलिंग-पुल्लिंग, (2) एकवचन-बहुवचन,

(3) विशेषणों का प्रयोग, (4) क्रियाओं का उचित प्रयोग और (5) शब्द चयन की समझ की आदि जानकारियाँ प्राप्त की गई, जाँची गई | **परिशिष्ट (घ)** में विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, शब्दभंडार और वाक्यनिर्माण के ज्ञान को निबंध लेखन के द्वारा प्राप्त किया गया |

चयनित विद्यालयों से प्राप्त उत्तरों का एक नमूना इस प्रकार है-

सातों विद्यालयों के नाम	स्वर ध्वनियाँ के सही उत्तर (प्रतिशत अंकों के द्वारा)	व्यंजन वर्ण के सही उत्तर (प्रतिशत अंकों के द्वारा)
1. सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (हिंदी माध्यम)	3.33%	70%
2. द एसेंबली ऑफ़ गॉड स्कूल	0%	3.33%
3. ओ.पी.एम. बालिका उच्च विद्यालय	13%	0%
4. अरोमा पूर्णांग शिक्षा गवेषणा केंद्र मातृज्योति विद्यालय	34.48%	0%
5. सरस्वती शिशु विद्या मंदिर(ओड़िया माध्यम)	56%	0%
6. सरकारी उच्च बालिका विद्यालय	0%	0%
7. ओ.पी.एम. उच्च विद्यालय (बालक)	20%	6.66%

सातों विद्यालयों से प्राप्त उत्तरों को प्रतिशत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है| यह प्रतिशत अंक 30 प्रतिभागियों के आधार पर निकाला गया है|

क्रम संख्या **1- सरस्वती शिशु विद्या मंदिर (हिंदी माध्यम)** में सिर्फ 1 प्रतिभागी अर्थात 3.33% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 70% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

2- द एसेंबली ऑफ़ गॉड स्कूल में 0 % ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 3.33% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

3- ओ.पी.एम. बालिका उच्च विद्यालय में 13% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

4- अरोमा पूर्णांग शिक्षा गवेषणा केंद्र मातृज्योति विद्यालय में 34.48% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

5- सरस्वती शिशु विद्या मंदिर(ओड़िया माध्यम) में 56% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

6- सरकारी उच्च बालिका विद्यालय में 0% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 0% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

7- ओ.पी.एम. उच्च विद्यालय (बालक) में 20% ही स्वर ध्वनियों के बारे में उत्तर दे पाये, जबकि व्यंजन वर्ण में लगभग 6.66% प्रतिभागियों ने सही उत्तर दिए |

अपवाद स्वरूप कुछ विद्यार्थियों को छोड़ दिया जाए तो लगभग सभी विद्यालयों के उत्तरदाताओं व्याकरणिक त्रुटियाँ देखी गई हैं|

कुछ विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव है, तो कुछ विद्यालयों में शिक्षकों के सही प्रशिक्षण का। शोध कार्य के लिए चयन किए गए विद्यालयों में से इस बात की जानकारी मुख्य रूप से पाई गई है कि विद्यार्थियों को हिंदी कहानी तो पढ़ना पसंद है, लेकिन हिंदी व्याकरण पढ़ना उन्हें पसंद नहीं।

कुल मिलाकर जिस उपकल्पना को लेकर यह शोध कार्य शुरू किया गया था, वह सत्य निकला कि झारसुगुड़ा (ओड़िशा), जो हिंदीतर भाषी क्षेत्र का हिस्सा है। यहाँ हिंदी भाषा शिक्षण की स्थिति अच्छी नहीं या चिंतनीय स्थिति में है। यहाँ हिंदी विस्तार के नाम पर बहुत सी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जो अब तक कारगर होते हुए नहीं दिख रहें हैं।

इस शोध कार्य के लिए बनाई गई प्रश्नावली के भाग (ख) I को छोड़ना पड़ा, क्योंकि यह भाग इस लघु शोध कार्य को शिक्षा के अन्य मुद्दों की ओर ले जा सकता था और कई अलग-अलग पहलुओं को भी इंगित कर रहा था, इस लघु शोध कार्य की सीमा से बाहर था |

इस शोध कार्य को करते हुए कुछ विद्यालयों द्वारा अपने निजी कारणों से अनुमति नहीं दी | जिस कारण उन विद्यालयों की हिंदी शिक्षा के स्तर को जानना संभव न हो सका |

इस लघु शोध कार्य को और भी अधिक पुख्ता, मजबूत बनाने के लिए RTI भी फ़ाइल की गई थी | लेकिन इस कार्य को करने के दौरान यह सामग्री मुझे प्राप्त नहीं हो सकी | इस रिपोर्ट को प्राप्त करने के बाद शायद इस लघु शोध प्रबंध का स्वरूप और भी परिष्कृत हो पाता |

शोध की उपयोगिता -

(1) जमीनी स्तर पर वास्तविक स्थिति को इस शोध के माध्यम से देखा जा सकता है|
(2) इस प्रकार ओड़िशा सरकार और केंद्र सरकार द्वारा अपनी भाषा नीति में सुधार हेतु कुछ सामग्री (input) लिए जा सकते हैं|
(3) शोध कार्य के निष्कर्षों के अनुरूप हिंदी विद्वान भी ऐसे क्षेत्रों में सामग्री की उपलब्धता और शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि हेतु योजनाएं बना सकते हैं|

ओड़िशा सरकार को इसकी ओर ध्यान देना चाहिए और हिंदी के प्रचार प्रसार का कार्य करने वाली संस्थाओं से मदद लेनी चाहिए | इस राज्य के हिंदी शिक्षकों को हिंदी व्याकरण के विशेष कोर्स के तहत प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए| और यह काम और भी कारगर और बेहतर रूप ले सकता है, जब म.गां.अं.हिं.वि.वि. के भाषा विद्यापीठ की ओर से इस प्रकार के अहिंदी भाषी प्रदेश को हिंदी भाषा शिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था उपलब्ध कराई जा सके |

शोध की सीमाएं –

- इस लघु शोध प्रबंध का शोध क्षेत्र केवल ओड़िशा के झारसुगुड़ा शहर तक ही मैंने सीमित रखा, यदि कोई शोधार्थी इच्छुक हो इस कार्य को और भी अधिक विस्तार से करने को, तो वह पूरे ओड़िशा के विद्यालयों को भी अपने इस शोध कार्य के लिए चुन सकता है | और महत्वपूर्ण डाटा प्राप्त कर अहिंदी भाषी क्षेत्र में हिंदी शिक्षण के सुधार की दिशा में काम कर सकता है|
- इस शोध प्रबंध के अध्याय चार में शिक्षकों के लिए बनाई गई प्रश्नावली से प्राप्त उत्तरों को रखा गया है| यदि कोई शोधार्थी चाहे तो वह और भी अधिक विस्तार के साथ अन्य रास्तों से भी डाटा प्राप्त कर सकता है| और उन नए डाटा का प्रयोग कर वे नए-नए तत्वों को प्राप्त कर सकता है|

  समय और संसाधनों की सीमा को देखते हुए इस शोध की कुछ सीमाएं है जिन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है| किंतु इससे आगे इस प्रकार के शोध कार्यों हेतु एक दिशा भी प्राप्त होती है|

****

संदर्भ-सूची

- **अग्रवाल, श्रीमन्नारायण, शर्मा, पद्मसिंह (अनु.). (1945). शिक्षा का माध्यम. आगरा: शिवलाल अग्रवाल एन्ड कं. लि. प्रकाशन.**
- **अग्रवाल, मुकेश. (2001). अन्य भाषा शिक्षण. दिल्ली: यूनिवर्सल पबलिशर्स.**
- **क्षत्रिया, के. (1965). मातृभाषा शिक्षण. आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर .**
- **गुरु, कामता प्रसाद. (1920). हिंदी व्याकरण. काशी: नागरी प्रचारिणी सभा.**
- **पाण्डेय, पृथ्वीराज. (2003). मानक हिंदी व्याकरण. इलाहबाद: जयप्रकाश प्रकाशन.**
- **पाण्डेय, रामकमल. (1985). त्रुटि विश्लेषण (सिध्दांत और व्यवहार). आगरा: केन्द्रीय हिंदी संस्थान.**
- **बघेका, गिजुभाई, त्रिवेदी, काशीनाथ (अनु.). (1962). प्राथमिक शाला में भाषा-शिक्षा. तवलाई: ग्रामभारती-आश्रम प्रकाशन.**
- **भारद्वाज, मैथिली प्रसाद. (2005). शोध प्रविधि. हरियाणा: आधार प्रकाशन.**
- **चौधरी, रामलखन (सं.). (1957). हिंदी शिक्षण कला. लखनऊ: हिंदी साहित्य भंडार.**
- **तिवारी, भोलानाथ. (2008). हिन्दी भाषा. इलाहाबाद: किताब महल प्रकाशन.**
- **वर्मा, ज्योति. (2007). सामाजिक सर्वेक्षण. नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस.**
- **वाजपेयी, किशोरीदास. (2007). अच्छी हिन्दी. नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन.**
- **सिंह, सूरज भान. (2012). हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण. दिल्ली: साहित्य सहकार प्रकाशन.**
- **श्रीवास्तव, रविन्द्रनाथ, श्रीवास्तव, बीणा (सं.). (2000). अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान सिद्धांत एवं प्रयोग. दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन.**
- GRIERSON.G. A. (2005). LINGUISTIC SURVEY OF INDIA, VOL V. INDO-ARYAN FAMILY (EASTERN GROUP) (Part II, Bihari & Oriya). Delhi: Low price publications.

शब्दकोश

1. प्रसाद, कालिका, सहाय, राजवल्लभ. श्रीवास्तव, मुकुन्दी लाल. (सं.). (2011). बृहद हिंदी शब्दकोश. वाराणसी: लिमिटेड प्रकाशन.
2. बाहरी, हरदेव. (2011). राजपाल हिंदी शब्दकोश. दिल्ली: printed at Deepika Enterprises.
3. वर्मा, रामचंद्र. (2012). लोकभारती बृहत प्रामाणिक हिंदी कोश. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

इंटरनेट

1. www.wikipedia.org
2. www.India.gov.in
3. https://scholar.google.co.in
4. www.hindivishwa.org
5. हिंदी का उद्भव (हिंदी में प्रयुक्त देवनागरी वर्णमाला), केंद्रीय हिंदी निदेशालय (उच्च शिक्षा विभाग), दिनांक- 27/08/2016
6. हिंदी देवनागरी लिपि और यूनिकोड, जगदीप सिंह दाँगी, हिंदी समय, दिनांक- 26/08/2016

******